



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मकुंडली

Dhaleshwar

19/10/1996 09:15 AM

Kanhegaon, Maharashtra



AstroRobo

★ KNOW YOUR FORTUNE ★

प्राथमिक तपशील

प्राथमिक तपशील

जन्म तारीख	19/10/1996
जन्माची वेळ	09:15
जन्माचे स्थान	Kanhegaon, Maharashtra
अक्षांश	19 N 50
रेखांश	74 E 33
वेळ विभाग	+05:30
अयनांश	23:48:45
सूर्योदय	6:27:43
सूर्यास्त	18:5:25

घात चक्र

महिना	अश्विन
तिथी	1,6,11
दिवस	शुक्रवार
नक्षत्र	रेवती
योग	व्यतिपात
करण	गर
प्रहर	1
चंद्र	9

पंचांग तपशील

तिथी	शुक्ल- सप्तमी
योग	सुकर्म
नक्षत्र	पूर्वाषाढा
करण	वाणिज

ज्योतिषविषयक तपशील

वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
योनी	वानर
गण	मनुष्य
नाडी	मध्य
जन्म राशी	धनु
राशी स्वामी	गुरु
नक्षत्र	पूर्वाषाढा
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
चरण	4
युज्जा	परभाग
तत्व	अग्नी
नांवाची अक्षरे	ढ
पाया	तांबे
लग्न	वृश्चिक
लग्न स्वामी	मंगळ

ग्रह स्थिती

ग्रह	वक्री	जन्म राशी	अंश	राशी स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	गृह
सूर्य	--	तूळ	02:13:38	शुक्र	चित्रा	मंगळ	12
चंद्र	--	धनु	24:20:56	गुरु	पूर्वाषाढा	शुक्र	2
मंगळ	--	कर्क	29:53:15	चंद्र	आश्लेषा	बुध	9
बुध	--	कन्या	22:46:39	बुध	हस्त	चंद्र	11
गुरु	--	धनु	17:08:01	गुरु	पूर्वाषाढा	शुक्र	2
शुक्र	--	सिंह	23:48:06	सूर्य	पूर्वा फाल्गुनी	शुक्र	10
शनी		मीन	08:29:09	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनी	5
राहू		कन्या	13:09:11	बुध	हस्त	चंद्र	11
केतू		मीन	13:09:11	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनी	5
वर्चस्व असणारां	--	वृश्चिक	09:05:52	मंगळ	अनुराधा	शनी	1



सूर्य
तूळ
चित्रा

लाभकारी



चंद्र
धनु
पूर्वाषाढा

योगकारक



मंगळ
कर्क
आश्लेषा

तटस्थ



बुध
कन्या
हस्त

अनिष्टकारी



गुरु
धनु
पूर्वाषाढा

लाभकारी



शुक्र
सिंह
पूर्वा फाल्गुनी

अनिष्टकारी



शनी
मीन
उत्तर भाद्रपद

तटस्थ



राहू
कन्या
हस्त

--

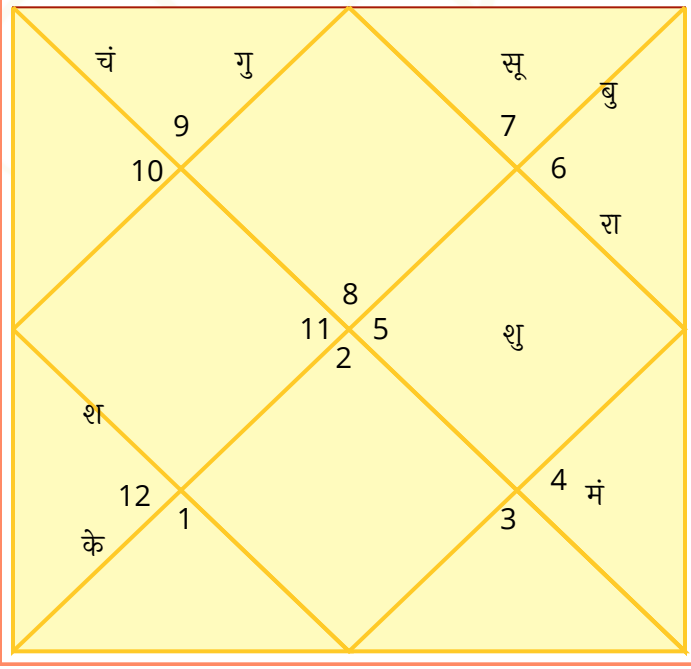


केतू
मीन
उत्तर भाद्रपद

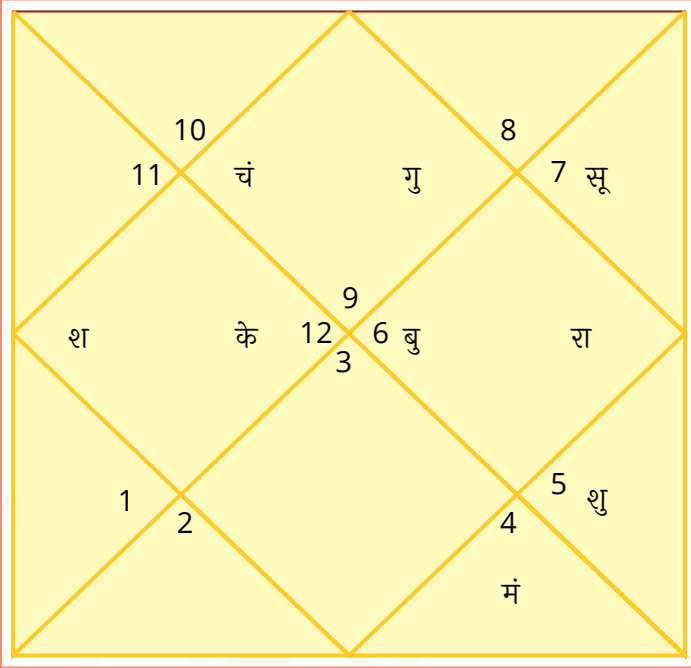
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

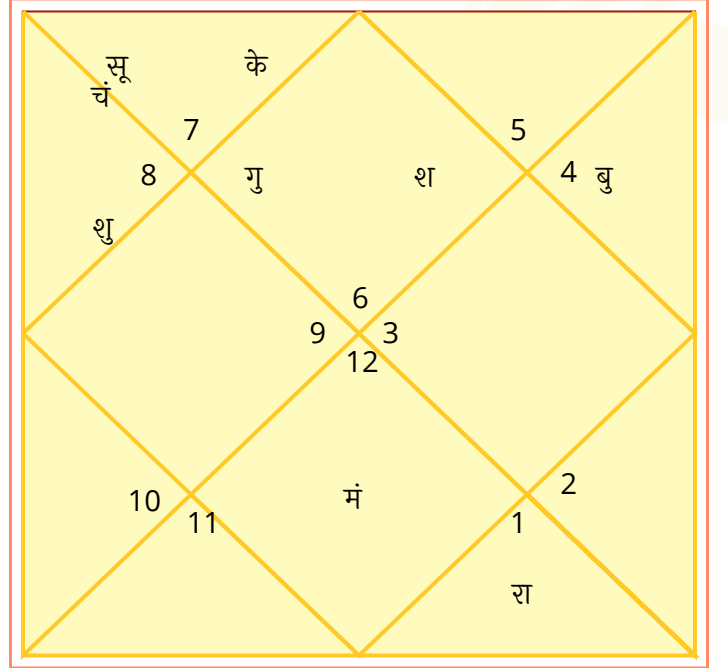


व्यक्तीच्या जन्मवेळी क्षितिजाच्या पूर्वेस जी रास अवतरित होते तीच त्या व्यक्तीची लग्न रास मानली जाते. जन्म कुंडली मध्ये बारा भाव असतात, ह्या बारा भावांमधील प्रथम भावाला लग्न भाव ह्या नावाने संबोधिले जाते, कुंडलीमधील बाकी सर्व भावांच्या तुलनेत लग्न भावाला सर्वाधिक महत्व आहे. लग्न भाव बालकाचा स्वभाव, रुची, वैशिष्ट्ये आणि चारित्र्यातील गुणांला प्रकट करतो.



चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली नंतर ज्या राशी मध्ये चंद्र असेल त्या राशीला लग्न मानून आणखी एका कुंडलीचा निरमान केला जातो ज्याला आपण चंद्र कुंडली म्हणतो, फलित ज्योतिष शास्त्रात चंद्र कुंडलीस लग्न कुंडली इतकेच महत्व देण्यात आलेले आहे.

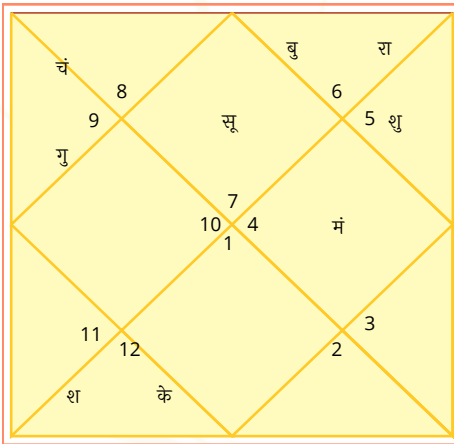


नवमांश कुंडली

नवांश कुंडली नऊ भागात विभागली जाते, ज्याच्या आधारावर जन्म कुंडली चे विवेचन होते. नवांश कुंडली मधील ग्रह उत्तम स्थितीत व उच्च असल्यास त्यास वर्गोत्तम स्थिती उत्पन्न होते व व्यक्ती शारीरिक व आत्मिक रित्या स्वस्थ आणि शुभदायक स्थितीस प्राप्त करतो.

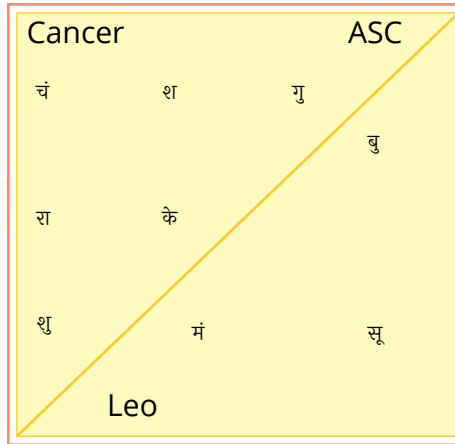
वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली



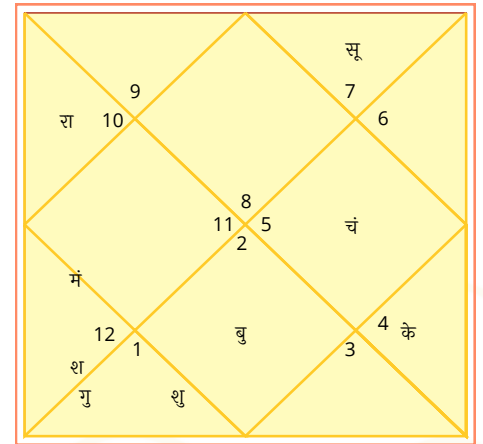
शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली



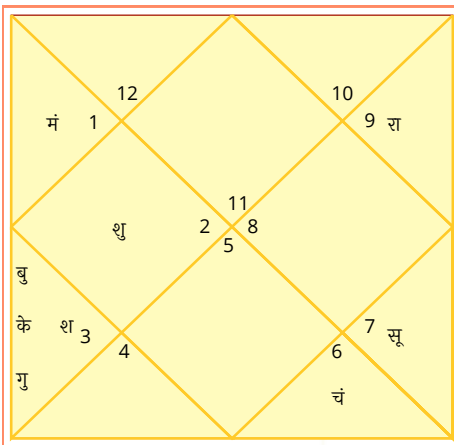
वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली



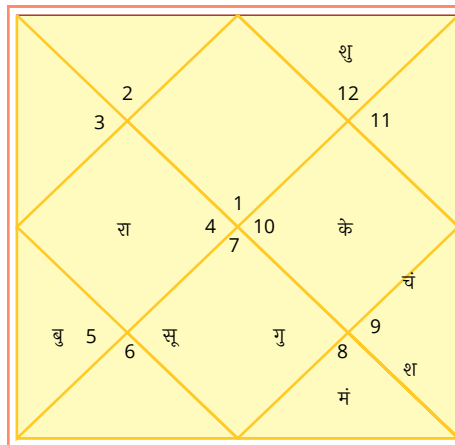
भाऊ बहीण

चतुर्थांश कुंडली



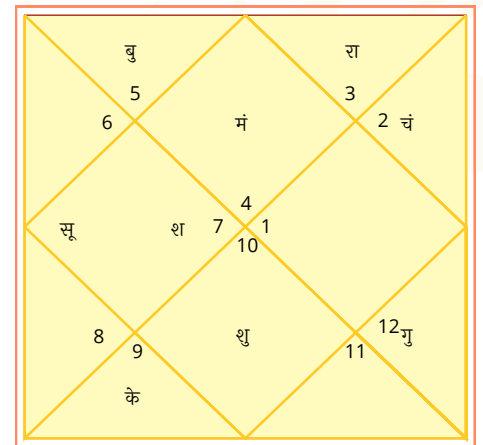
भाग्य

पंचमांश कुंडली



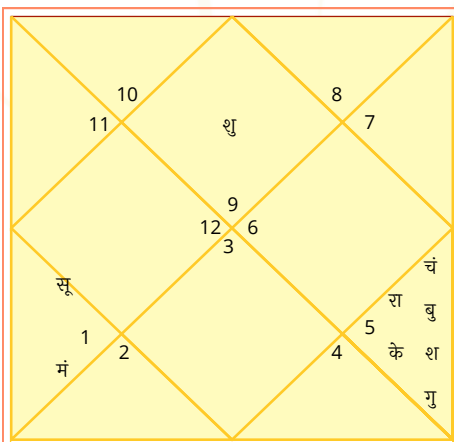
आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली



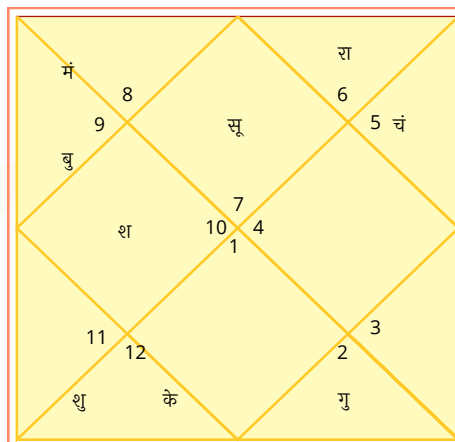
सन्तान

अष्टमांश कुंडली



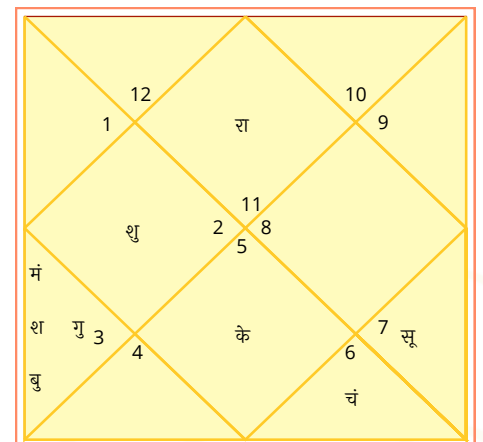
आयु

दशमांश कुंडली



व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादश कुंडली

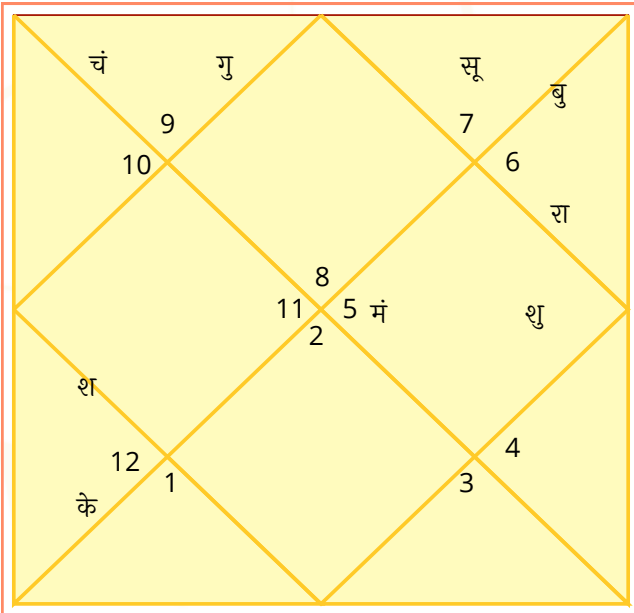


माता पिता, पितृक सुख

लग्न - 09:05:52 दशम भाव मध्य - 13:10:38

गृह	जन्म राशी	भाव मध्य	जन्म राशी	भाव संधि
1	वृश्चिक	09:05:52	वृश्चिक	24:46:39
2	धनु	10:27:27	धनु	26:08:15
3	मकर	11:49:03	मकर	27:29:50
4	कुंभ	13:10:38	कुंभ	27:29:50
5	मीन	11:49:03	मीन	26:08:15
6	मेष	10:27:27	मेष	24:46:39
7	वृषभ	09:05:52	वृषभ	24:46:39
8	मिथुन	10:27:27	मिथुन	26:08:15
9	कर्क	11:49:03	कर्क	27:29:50
10	सिंह	13:10:38	सिंह	27:29:50
11	कन्या	11:49:03	कन्या	26:08:15
12	तूळ	10:27:27	तूळ	24:46:39

चलित कुंडली



लग्न कुंडली चे शोधन चलित कुंडली आहे , फरक फक्त इतकाच आहे कि लग्न कुंडली हे दर्शवते कि जन्मवेळी लग्न काय आहे व सर्व ग्रह कोणत्या राशी मध्ये विचरण करीत आहेत व चलित कुंडली हे स्पष्ट करते कि जन्मवेळी कोणता भाव कोणत्या राशीचा प्रभाव आहे व कोणत्या भावास कोणता ग्रह प्रभावित करीत आहे

वविम्शोत्तरी दशा - I

शुक्र

11-04-1980 03:06
11-04-2000 03:06

सूर्य

11-04-2000 03:06
11-04-2006 15:06

चंद्र

11-04-2006 15:06
11-04-2016 03:06

शुक्र	11-08-1983 15:06
सूर्य	10-08-1984 21:06
चंद्र	11-04-1986 15:06
मंगळ	11-06-1987 18:06
राहू	11-06-1990 12:06
गुरु	09-02-1993 12:06
शनी	11-04-1996 03:06
बुध	10-02-1999 00:06
केतू	11-04-2000 03:06

सूर्य	29-07-2000 16:54
चंद्र	28-01-2001 07:54
मंगळ	05-06-2001 04:00
राहू	29-04-2002 21:24
गुरु	16-02-2003 02:12
शनी	29-01-2004 01:54
बुध	04-12-2004 13:00
केतू	11-04-2005 09:06
शुक्र	11-04-2006 15:06

चंद्र	10-02-2007 00:06
मंगळ	11-09-2007 01:36
राहू	11-03-2009 22:36
गुरु	11-07-2010 22:36
शनी	10-02-2012 06:06
बुध	11-07-2013 16:36
केतू	09-02-2014 18:06
शुक्र	11-10-2015 12:06
सूर्य	11-04-2016 03:06

मंगळ

11-04-2016 03:06
11-04-2023 21:06

राहू

11-04-2023 21:06
11-04-2041 09:06

गुरु

11-04-2041 09:06
11-04-2057 09:06

मंगळ	07-09-2016 06:33
राहू	25-09-2017 18:51
गुरु	01-09-2018 16:27
शनी	11-10-2019 12:06
बुध	07-10-2020 17:03
केतू	05-03-2021 20:30
शुक्र	05-05-2022 23:30
सूर्य	10-09-2022 19:36
चंद्र	11-04-2023 21:06

राहू	23-12-2025 01:18
गुरु	17-05-2028 15:42
शनी	24-03-2031 14:48
बुध	11-10-2033 00:06
केतू	29-10-2034 12:24
शुक्र	29-10-2037 06:24
सूर्य	22-09-2038 23:48
चंद्र	23-03-2040 20:48
मंगळ	11-04-2041 09:06

गुरु	30-05-2043 13:54
शनी	10-12-2045 21:06
बुध	17-03-2048 18:42
केतू	21-02-2049 16:18
शुक्र	23-10-2051 16:18
सूर्य	10-08-2052 21:06
चंद्र	10-12-2053 21:06
मंगळ	16-11-2054 18:42
राहू	11-04-2057 09:06

वविम्शोत्तरी दशा - ॥

शनी

11-04-2057 09:06
11-04-2076 03:06

बुध

11-04-2076 03:06
11-04-2093 09:06

केतू

11-04-2093 09:06
12-04-2100 03:06

शनी 14-04-2060 04:09

बुध 23-12-2062 07:18

केतू 01-02-2064 02:57

शुक्र 02-04-2067 17:57

सूर्य 14-03-2068 17:39

चंद्र 14-10-2069 01:09

मंगळ 22-11-2070 20:48

राहू 28-09-2073 19:54

गुरु 11-04-2076 03:06

बुध 07-09-2078 18:33

केतू 04-09-2079 23:30

शुक्र 05-07-2082 20:30

सूर्य 12-05-2083 07:36

चंद्र 10-10-2084 18:06

मंगळ 07-10-2085 23:03

राहू 26-04-2088 08:21

गुरु 02-08-2090 05:57

शनी 11-04-2093 09:06

केतू 07-09-2093 12:33

शुक्र 07-11-2094 15:33

सूर्य 15-03-2095 11:39

चंद्र 14-10-2095 13:09

मंगळ 11-03-2096 16:36

राहू 30-03-2097 04:54

गुरु 06-03-2098 02:30

शनी 14-04-2099 22:09

बुध 12-04-2100 03:06

वर्तमान दशा



दशेचे नांव	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पत्ति तिथि
महादशा	राहू	11-04-2023 21:06	11-04-2041 09:06
अंतर्दशा	गुरु	23-12-2025 01:18	17-05-2028 15:42
प्रत्यंतर दशा	गुरु	23-12-2025 01:18	18-04-2026 22:25
सूक्ष्म दशा	गुरु	23-12-2025 01:18	07-01-2026 15:19

* दशा समाप्तीची तारीख दर्शवते

योगिनी दशा - I

सिद्धा (7 वर्ष)

6-1-1991 23:51
6-1-1998 23:51

संकेता (8 वर्ष)

6-1-1998 23:51
6-1-2006 23:51

मंगला (1 वर्ष)

6-1-2006 23:51
6-1-2007 23:51

सिद्धा	18-5-1992 3:21
संकेता	7-12-1993 7:21
मंगला	16-2-1994 7:51
पिंगळा	8-7-1994 8:51
घन्या	6-2-1995 10:21
भ्रमरी	17-11-1995 12:21
भद्रिका	6-11-1996 14:51
उल्का	6-1-1998 23:51

संकेता	18-10-1999 7:51
मंगला	7-1-2000 11:51
पिंगळा	17-6-2000 19:51
घन्या	16-2-2001 7:51
भ्रमरी	6-1-2002 23:51
भद्रिका	16-2-2003 19:51
उल्का	17-6-2004 19:51
सिद्धा	6-1-2006 23:51

मंगला	17-1-2006 3:21
पिंगळा	6-2-2006 10:21
घन्या	8-3-2006 20:51
भ्रमरी	18-4-2006 10:51
भद्रिका	8-6-2006 4:21
उल्का	8-8-2006 1:21
सिद्धा	18-10-2006 1:51
संकेता	6-1-2007 23:51

पिंगळा (2 वर्ष)

6-1-2007 23:51
6-1-2009 23:51

घन्या (3 वर्ष)

6-1-2009 23:51
6-1-2012 23:51

भ्रमरी (4 वर्ष)

6-1-2012 23:51
6-1-2016 23:51

पिंगळा	16-2-2007 13:51
घन्या	18-4-2007 10:51
भ्रमरी	8-7-2007 14:51
भद्रिका	18-10-2007 1:51
उल्का	16-2-2008 19:51
सिद्धा	7-7-2008 20:51
संकेता	17-12-2008 4:51
मंगला	6-1-2009 23:51

घन्या	8-4-2009 7:21
भ्रमरी	8-8-2009 1:21
भद्रिका	7-1-2010 5:51
उल्का	8-7-2010 20:51
सिद्धा	6-2-2011 22:21
संकेता	8-10-2011 10:21
मंगला	7-11-2011 20:51
पिंगळा	6-1-2012 23:51

भ्रमरी	17-6-2012 7:51
भद्रिका	6-1-2013 5:51
उल्का	6-9-2013 17:51
सिद्धा	17-6-2014 19:51
संकेता	8-5-2015 11:51
मंगला	18-6-2015 1:51
पिंगळा	7-9-2015 5:51
घन्या	6-1-2016 23:51

भद्रिका (5 वर्ष)

6-1-2016 23:51
6-1-2021 23:51

उल्का (6 वर्ष)

6-1-2021 23:51
6-1-2027 23:51

सिद्धा (7 वर्ष)

6-1-2027 23:51
6-1-2034 23:51

भद्रिका 16-9-2016 15:21

उल्का 18-7-2017 0:21

सिद्धा 8-7-2018 2:51

संकेता 17-8-2019 22:51

मंगला 7-10-2019 16:21

पिंगळा 17-1-2020 3:21

धन्या 17-6-2020 7:51

भ्रमरी 6-1-2021 23:51

उल्का 7-1-2022 5:51

सिद्धा 9-3-2023 8:51

संकेता 8-7-2024 8:51

मंगला 7-9-2024 5:51

पिंगळा 6-1-2025 23:51

धन्या 8-7-2025 14:51

भ्रमरी 9-3-2026 2:51

भद्रिका 6-1-2027 23:51

सिद्धा 18-5-2028 3:21

संकेता 7-12-2029 7:21

मंगला 16-2-2030 7:51

पिंगळा 8-7-2030 8:51

धन्या 6-2-2031 10:21

भ्रमरी 17-11-2031 12:21

भद्रिका 6-11-2032 14:51

उल्का 6-1-2034 23:51

संकेता (8 वर्ष)

6-1-2034 23:51
6-1-2042 23:51

मंगला (1 वर्ष)

6-1-2042 23:51
6-1-2043 23:51

पिंगळा (2 वर्ष)

6-1-2043 23:51
6-1-2045 23:51

संकेता 18-10-2035 7:51

मंगला 7-1-2036 11:51

पिंगळा 17-6-2036 19:51

धन्या 16-2-2037 7:51

भ्रमरी 6-1-2038 23:51

भद्रिका 16-2-2039 19:51

उल्का 17-6-2040 19:51

सिद्धा 6-1-2042 23:51

मंगला 17-1-2042 3:21

पिंगळा 6-2-2042 10:21

धन्या 8-3-2042 20:51

भ्रमरी 18-4-2042 10:51

भद्रिका 8-6-2042 4:21

उल्का 8-8-2042 1:21

सिद्धा 18-10-2042 1:51

संकेता 6-1-2043 23:51

पिंगळा 16-2-2043 13:51

धन्या 18-4-2043 10:51

भ्रमरी 8-7-2043 14:51

भद्रिका 18-10-2043 1:51

उल्का 16-2-2044 19:51

सिद्धा 7-7-2044 20:51

संकेता 17-12-2044 4:51

मंगला 6-1-2045 23:51

योगिनी दशा - III

धन्या (3 वर्ष)

6-1-2045 23:51
6-1-2048 23:51

भ्रमरी (4 वर्ष)

6-1-2048 23:51
6-1-2052 23:51

भद्रिका (5 वर्ष)

6-1-2052 23:51
6-1-2057 23:51

धन्या 8-4-2045 7:21

भ्रमरी 8-8-2045 1:21

भद्रिका 7-1-2046 5:51

उल्का 8-7-2046 20:51

सिद्धा 6-2-2047 22:21

संकेता 8-10-2047 10:21

मंगला 7-11-2047 20:51

पिंगळा 6-1-2048 23:51

भ्रमरी 17-6-2048 7:51

भद्रिका 6-1-2049 5:51

उल्का 6-9-2049 17:51

सिद्धा 17-6-2050 19:51

संकेता 8-5-2051 11:51

मंगला 18-6-2051 1:51

पिंगळा 7-9-2051 5:51

धन्या 6-1-2052 23:51

भद्रिका 16-9-2052 15:21

उल्का 18-7-2053 0:21

सिद्धा 8-7-2054 2:51

संकेता 17-8-2055 22:51

मंगला 7-10-2055 16:21

पिंगळा 17-1-2056 3:21

धन्या 17-6-2056 7:51

भ्रमरी 6-1-2057 23:51

उल्का (6 वर्ष)

6-1-2057 23:51
6-1-2063 23:51

* दशा समाप्तीची तारीख दर्शवते

उल्का 7-1-2058 5:51

सिद्धा 9-3-2059 8:51

संकेता 8-7-2060 8:51

मंगला 7-9-2060 5:51

पिंगळा 6-1-2061 23:51

धन्या 8-7-2061 14:51

भ्रमरी 9-3-2062 2:51

भद्रिका 6-1-2063 23:51

9

भाग्यांक

1

मूलांक

4

नामांक

तुमचे नांव	Dhaleshwar
जन्म तारीख	19-10-1996
मूलांक	1
मूलांक स्वामी	सूर्य
मित्र अंक	9
सम अंक	2
शत्रु अंक	6
शुभ दिवस	रविवार, सोमवार
शुभ रत्न	माणिक
शुभ उपरत्न	रक्तेतमणि, लाल तुरमली
शुभ देवता	सूर्य
शुभ धातु	तांब
शुभ रंग	लाल
शुभ मंत्र	ओम ह्रीं सूर्याय नमः

तुमच्याबद्दल

मूलांक 1च्या प्रभावामुळे, तुम्ही एक दृढ विश्वासाची व्यक्ती असाल. जेव्हाही कधी तुम्ही तुमचा शब्द कुणाला देता, तेव्हा तुम्ही तो पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करता. तुमची इच्छाशक्ती अचल असेल. तुमच्या मानसिक आणि मैत्रीसंबंधांमध्ये स्थिरता असेल. तुमच्या जिवलग नात्यांविषयी तुम्ही ज्या काही अपेक्षा कराल, त्या पूर्ण करण्याचा तुम्ही नेहेमी दीर्घकाळ प्रयत्न कराल. तुमचे प्रेम आणि दीर्घकालीक संबंध चिरंतन असतील. जर काही कारणाने तुमचे कुणाशी कटुसंबंध निर्माण झाले किंवा वाद झाले, तर ते सुद्धा दीर्घकाळासाठी असतील. तुमच्या स्वतंत्र विचार करणाऱ्या स्वभावगुणामुळे, तुम्हाला इतरांच्या इच्छेनुसार काम करणे त्रासदायक वाटेल.

कुणाच्या हाताखाली काम करण्यापेक्षा, स्वतंत्र निर्णय घेण्याच्या वातावरणामध्ये तुमची भरभराट होईल. तुमच्या निरंतर प्रयासामुळे, तुम्ही जे काही कार्य कराल ते निष्पक्ष आणि कोणत्याही दबावाशिवाय असेल. कुणाहीकडून हस्तक्षेप तुम्हाला बिलकुल चालणार नाही. जसा मूलांक 1चा स्वामी सूर्य आहे, सूर्याशी संबंधित अद्वितीय वैशिष्ट्ये तुमच्यामध्ये कमीजास्त प्रमाणात उपस्थित असतील. सूर्याच्या प्रभावामुळे तुमची इतरांना मदत करणे, उपचार करण्याची वृत्ती असेल. सामाजिक वर्तुळामध्ये सूर्यासारखे चमकायला तुम्हाला आवडेल. सामाजिक संस्थांचे मुख्य होण्याची तुमची सदैव इच्छा असेल. तुम्ही हे पद तुमच्या परिश्रमाने आणि समर्पणाने प्राप्त कराल

तुमच्यासाठी शुभ वेळ

पश्चिमी ज्योतिषशास्त्राप्रमाणे सूर्याचे मेष आणि सिंह राशीत संक्रमण 21 मार्च पासून 20 एप्रिल पर्यंत आणि 24 जुलै पासून ते 23 ऑगस्ट पर्यंत होत असते. हिंदू विचारानुसार या तारखा 13 एप्रिल पासून ते 12 मे पर्यंत आणि 17 ऑगस्ट पासून ते 16 सप्टेंबर पर्यंत आहेत. मेष राशीमध्ये सूर्य उच्च स्थानी असतो तर सिंह राशीत तो स्वतःच्या राशीत असतो.

जसे की या काळात सूर्याचे किरण तीव्र आणि तेजस्वी असतात, ही वेळ मूलांक 1च्या लोकांसाठी सर्व प्रकारे प्रगतीची आणि लाभकारी असते. या काळात हाती घेतलेली सर्व कार्ये त्यांचे लक्ष्य पूर्ण करतात. तुम्ही तुमच्या सर्वात महत्वाच्या योजना आणि कल्पना त्या सर्व तारखांना तडीस नेण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे ज्यादिवशी तुमचा स्वतःचा मूलांक असतो जसे की कोणत्याही महिन्याची 1ली, 10वी, 19वी किंवा 28वी तारीख



तुम्ही प्रत्येक दिवशी सकाळी स्नान केल्यानंतर खालील सूर्य गायत्री मंत्र 11, 21 किंवा 108 वेळा जप केला पाहिजे
:।। आदीत्य विदमाहे प्रभाकराय धीमहि तनः सूर्यः प्रचोदयात् ।।



ज्या वेळी व्यक्तीच्या कुंडलीतील राहू व केतू ग्रहांच्या मधोमध अन्य ग्रहांचा समावेश होतो त्या वेळी कालसर्प दोषाचा निर्माण होतो कारण कुंडलीतील एका भावात राहू व दुसऱ्या भावात केतू स्थानापन्न झाल्याने, इतर ग्रहां कडून होणारी फलप्राप्ती स्थगित होते, ह्या दोन्ही ग्रहां मध्ये बाकी ग्रह अडकून जातात व व्यक्ती साठी समस्या उत्पन्न करतातह्या दोषा मुळे, कामात बाधा निर्माण होणे, नौकरीत अडचण येणे , लग्न कार्यात विलंब होणे व आर्थिक समस्या ईत्यादी त्रास उदभवतात

कालसर्प दोषाने पीडित असलेल्या सर्व व्यक्तींवर ह्या दोषाचा समान प्रभाव पडत नाही . कोणत्या भावा मध्ये कोणती रास आहे व त्या मध्ये कोण कोणते ग्रह कुठे स्थित आहेत व त्यांची शक्ती

कितपत आहे ह्या सर्व बाबींचा परिणाम पीडित व्यक्तीवर पडतो. म्हणूनच, कालसर्पयोग असल्यास भयभीत होण्याची आवश्यकता नसून त्या बदलचे सखोल ज्योतिषीय विश्लेषण करवून घेणे व त्याच्या प्रभावां बदल तपशीलवार माहिती मिळवणे अधिक उचित ठरेल.कालसर्प योग जरी त्रासदायक मानला जात असला तरी विधिवत प्रकारे त्याचा उपाय केल्याने ह्या योगाचे सिद्ध योगात रुपांतर होऊ शकते.

अनंत

कुळिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कर्कोटक

शंखचूड

घातक

विषधर

शेषनाग

तुमच्या जन्मकुंडलीतील काळसर्पयोग



!!

तुमच्या पत्रिकेत कालसर्प दोष नाही आहे.

काळसर्प नांव

नाही

दिशा

--

काळसर्प दोषाचा प्रभाव

सामान्यतः कालसर्प दोष / योगा मुळे जीवनात अनेक संघर्षांना तोंड द्यावे लागते , स्वास्थ्य , धन, करियर , व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतान तथा जीवनातील अन्य पैलूंवर त्याचा प्रभाव पडतांना दिसून येतो.परंतु पीडित व्यक्तीच्या कुंडली मध्ये उपस्थित काल सर्प दोष / योग कितपत प्रभावी आहे हे जाणून घेणे आवश्यक आहे ह्या दोषाचा तुमच्या स्वास्थ्य , धन, करियर , व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतान तथा जीवनातील अन्य पैलूंवर विपरीत प्रभाव पडत आहे का ? ह्या दोषामुळे तुम्हाला अनेक संघर्षांना सामोरी जावे लागत आहे का ? हे आपण कसे जाणून घ्याल ? ह्याचा निर्णय जन्म कुंडली मधील विभिन्न भावा मध्ये राहू तथा केतू ची स्थिती जाणून घेतल्याने होऊ शकतो उदाहरणार्थ, जर राहू लग्न मध्ये आणि केतू सप्तम भावात स्थित असेल तर व्यक्तीच्या स्वास्थ्य आणि आर्थिक परिस्थितीत दोष उत्पन्न होतो कारण प्रथम भाव पीडित व्यक्तीच्या आरोग्य तथा जीवन संबंधित संघर्षांचा सूचक आहे. तसेच राहू द्वितीय भावा मध्ये असल्यास व्यक्तीला त्याच भावाशी संबंधित असलेल्या गोष्टी जसे पारिवारिक नाती संबंध तथा धन प्राप्ती मध्ये संघर्ष आणि त्रासांना सामोरी जावे लागते ह्या प्रकारे जन्म कुंडली च्या बारा भावा मध्ये बनलेल्या कालसर्प दोष ? योगाच्या प्रभावांची गणना बारा प्रकारे केली जाते व बारा प्रकारचे कालसर्प दोष /योग बनतात.

काळसर्प दोषावर उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्र घरात स्थापन करावे त्याची नियमित पूजा करावी
- हनुमान चालीसा १०८ वेळा पठण करावी।
- रुद्रभषेक- शंकराचा रुद्र अभिषेक अथवा पंचोपचार पूजन, उज्जैन च्या महाकालेश्वर मंदिरात , काशी विश्वनाथ मंदिरात अथवा कोणत्याही ज्योतिर्लिंग शिव मंदिरात करावे
- शुभ मुहूर्त पाहून वाहत्या पाण्यात तीन वेळा कोळसा सोडावा
- विद्यार्थी वर्गाने सरस्वती मातेचे विधिवत पूजन करावे व सरस्वती बीज मंत्राचा एक वर्ष जाप करावा
- महामृत्युंजय मंत्राचा जाप ११ माळा रोज ,राहू व केतूची दशा अंतर्दशा असे पर्यंत करावा व दर शनिवारी श्री शनिदेवाला तेलाभिषेक करावा आणि मंगळवारी हनुमंताला वस्त्र चढवावे .
- श्रावण मासात ३० दिवस शंकराला अभिषेक करावा
- एक वर्षभर गणपती अथर्वशीर्षाचे नित्य पठण करावे
- श्रावणात रोज अंधोळीनंतर ११ माळी नमः शिवाय या मंत्राचा जाप करून शंकराला बेल पत्र व गायीचे दूध आणि गंगाजल अर्पण करावे व सोमवारी उपवास धरावा



मंगल दोष म्हणजे काय?

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं।

अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम

भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

एकूण मंगल टक्केवारीमध्ये

27.5%

मांगलिक फल

तुमच्या कुंडलीत मांगलिक दोष आढळला आहे आणि त्याचे प्रमाण परिणामकारक आहे त्यामुळे तुम्हाला योग्य काळजी घेण्याची गरज आहे. तुम्हाला मंगळ आहे.



गृह/भाव वर आधारीत

तुमच्या कुंडली मध्ये शनी ग्रह पंचम या घरात आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेत पंचम या घरात केतू स्थित आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेत सूर्य बारावे घरात स्थित आहे.



दृष्टीवर आधारीत

तुमच्या जन्म पत्रिकेत पहिल्या घरावर केतू या ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील पाचव्या घरावर राहू ग्रहाची दृष्टी आहे.

शनी ग्रह तुमच्या जन्म पत्रिकेत दुसऱ्या घरावर दृष्टी ठेऊन आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील सातव्या घरावर शनी ग्रहाची दृष्टी आहे.

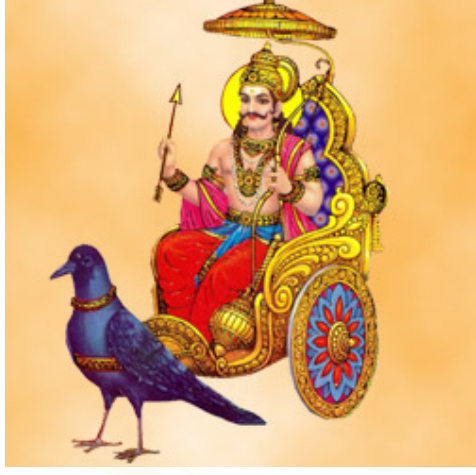
तुमच्या जन्म पत्रिकेतील सातव्या घरावर राहू ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील चौथ्या घरावर मंगळ ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील बाराव्या घरावर मंगळ ग्रहाची दृष्टी आहे.

मंगल दोषाचे उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है ।
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है ।
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं ।
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है ।
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है ।
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुःप्रभाव में लाभ मिलता है ।
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें ।
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें ।



साडेसाती दोष म्हणजे काय?

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है।

सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं है। इसमें कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी,

अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

तुमच्या कुंडलीतील साडेसातीची उपस्थिती



नाही, सध्या तुमची साडेसाती सुरु नाही आहे.

विचार करायचे दिवसं

3-1-2026

शनि राशि

मीन

चंद्र राशी

धनु

वक्री शनी

नाही

प्राचीन काळापासून, हे मान्यताप्राप्त आहे कि रत्ने, एक अलंकारीक अभिव्यक्ती असण्याखेरीज, उपचार करण्याच्या आणि रक्षण करण्याच्या दैवी शक्तीने समृद्ध आहेत. वैदिक ज्योतिषानुसार, ग्रह सूक्ष्म उर्जा प्रसारित करतात ज्यांचा आपल्या जन्म कुंडलीमध्ये असलेल्या त्यांच्या स्थितीवर अवलंबून आपल्या जीवनावर अनुकूल किंवा प्रतिकूल परिणाम प्रतिध्वनित होतो. प्रत्येक ग्रहाचे एकमेव विशिष्ट असे त्याच्याशी सुसंगत असणारे ज्योतिष रत्न आहे जे त्या ग्रहाप्रमाणेच तशाच वैश्विक रंगाची उर्जा उत्सर्जित करते. रत्ने सकारात्मक किरणे प्रतिबिंबित करून किंवा नकारात्मक किरणांचे शोषण करून कार्य करतात. योग्य रत्न वापरण्याने त्याच्याशी सुसंगत ग्रहाचा ते वापरणाऱ्यावर सकारात्मक परिणाम होण्यामध्ये वृद्धी होऊ शकते कारण रत्न सकारात्मक स्पंदने वेगळी करून घेते आणि फक्त त्यांनाच ते वापरणाऱ्याच्या शरीरात प्रवेश करण्यास अनुमती देते.

जीवन रत्न



मूंगा

ऍसेन्डन्ट किंवा लग्न हे शरीर आणि त्याच्याशी संबंधित असलेले सर्व काही ठळकपणे दर्शवते, उदा. आरोग्य, दीर्घायुष्य, नांव, प्रतिष्ठा, जीवनमार्ग, इत्यादी. थोडक्यात, त्याच्यामध्ये संपूर्ण जीवनाचे सार सामावलेले आहे. त्यामुळे लग्नेश बरोबर सुसंगत असलेले रत्न, ऍसेन्डन्टचा स्वामी याला जीवनरत्न म्हणजे लाइफस्टोन असे म्हटले जाते.

कारक रत्न



पुखराज

कुंडलीतील पाचवे घर हे अजून एक शुभ घर आहे. पाचवे घर बुद्धीमत्ता, उच्च शिक्षण, मुले, अनपेक्षित लाभ इत्यादी ठळक दर्शवणारे आहे. हे घर पूर्व पुण्याईच्या कर्मांचे स्थान म्हणजे भूतकाळातील पुण्यकर्मांचे सुद्धा घर आहे. त्यामुळे ते शुभ घर म्हणून मानले जाते. पाचव्या घराच्या स्वामीशी सुसंगत असणाऱ्या रत्नाला लाभ रत्न असे म्हटले जाते.

भाग्य रत्न



मोती

कुंडलीतील नवव्या घराला भाग्यस्थान म्हटले जाते म्हणजे नशीब किंवा दैवाचे घर. हे घर सुदैव, यश, गुणवत्ता, प्राप्ती, ज्ञान इत्यादीशी संबंधित आहे. हे घर ती कर्म फळे दर्शवते जी एखादी व्यक्ती त्याने त्याच्या पूर्वजन्मांमध्ये केलेल्या पुण्यकर्मांमुळे उपभोगू शकेल. नवव्या घराच्या स्वामीशी सुसंगत असणाऱ्या रत्नाला भाग्यरत्न म्हणजे लकी स्टोन असे म्हटले जाते. हे रत्न वापरल्याने भाग्य हा घटक बळकट होतो.

जीवन रत्न - मूंगा



पर्याय	लाल सुलेमानी
बोट	तर्जनी
भार	6 - 10.25 कैरेट

दिवस	मंगळवार
अधिदेवता	मंगळ
धातु	सुवर्ण



वर्णन

लाल पोवळे हे मंगळ ग्रहाचे रत्न आहे. लाल पोवळे परिधान केल्याने आपण शूर होतो आणि आपल्या शत्रूंचा पराभव होतो. लाल पोवळे दुष्ट आत्मा, गुप्तता व वाईट स्वप्नांपासून रक्षण करते.



वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी मंगळवारी सकाळी सूर्योदयाच्या १ तासानंतर लाल पोवळे परिधान करावे.



बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर लाल पोवळ्याची अंगठी उजव्या हाताच्या तर्जनीमध्ये घालावी.



वजन आणि धातु

लाल पोवळे हे ६ कॅरेटपेक्षा जास्त वजनाचे घातले पाहिजे. ते तांबे मिश्रित सोन्याच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे की रत्नाचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



मंत्र

पण्कदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले की लाल पोवळे रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. या रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ क्रां क्रीं क्रीं सः भौमाय नमः



पर्याय

लाल पोवळे रत्नाला पर्याय म्हणून सूर्यकांत मणी , मूंगा, रक्ताश्म वापरू शकता.



इशारा

लाल पोवळे कधीही पाचू, हिरा, नीलम, गोमेद, व वैदुर्य ही रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.



प्राण प्रतिष्ठा

लाल पोवळे परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.

कारक रत्न - पुष्कराज



पर्याय	टोपाझ
बोट	तर्जनी
भार	4 - 5.25 कैरेट

दिवस	गुरुवार
अधिदेवता	गुरु
धातु	सुवर्ण



वर्णन

पुष्कराज हे गुरुचे रत्न आहे. पुष्कराज परिधान केल्याने चांगले आरोग्य, ज्ञान, मालमत्ता, दीर्घायुष्य, नावलौकिक, पुरस्कार व प्रसिद्धी मिळते. पुष्कराज वाईट आत्म्यापासून रक्षण करतो.



वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी गुरुवारी सकाळी पुष्कराज परिधान करावा.



बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर अंगठी उजव्या हाताच्या तर्जनीमध्ये घालावी.



वजन आणि धातु

पुष्कराज हा तीन कॅरेटपेक्षा जास्त वजनाचा घातला पाहिजे. तसेच तो ६, ११, १५ कॅरेट्स चा कधीच नसावा. तो सोन्याच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे कि पुष्कराजचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



मंत्र

पणकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि पुष्कराज रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. पुष्कराज रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः



पर्याय

पुष्कराजला पर्याय म्हणून पिवळा मोती, पिवळा गोमेद, पिवळा ट्रूमलाईन, टोपाझ किंवा स्फटिक टोपाझ वापरू शकता.



प्राण प्रतिष्ठा

पुष्कराज परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



इशारा

पुष्कराज कधीही हिरा, नीलम, गोमेद व वैदुर्य हि रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.

भाग्य रत्न - मोती



पर्याय	चंद्र मणी
बोट	अनामिका या कनिष्ठा
भार	5 - 7.25 कैरेट

दिवस	सोमवार
अधिदेवता	चंद्र
धातु	चांदी



वर्णन

मोती हे चंद्राचे रत्न आहे. मोती परिधान केल्याने संपत्ती, प्रसिद्धी व चेतना मिळते. मोती घालणाऱ्या माणसाला बुद्धिमत्ता व दीर्घायु मिळते.



वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी सोमवारी सकाळी मोती परिधान करावा.



बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर मोत्याची अंगठी उजव्या हाताच्या तर्जनीमध्ये घालावी.



वजन आणि धातु

मोती हा २, ४, ६ किंवा ११ कॅरेट वजनाचा घातला पाहिजे. तसेच तो चांदीच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे कि मोत्याचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



मंत्र

पणकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि मोती रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. मोती रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ श्रूं श्रूं श्रूं सः चन्द्राय नमः



पर्याय

मोत्याला पर्याय म्हणून चंद्रमणी व सफेद पुष्कराज वापरू शकता.



इशारा

मोती कधीही हिरा, नीलम, पाचू व वैदुर्य हि रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.



प्राण प्रतिष्ठा

मोती परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



लग्न फळ - वृश्चिक

स्वामी	मंगळ
प्रतीक	वृश्चिक
वैशिष्ट्ये	ओलसर, स्थावर, उत्तर
भाग्यशाली रत्न	लाल पोवळे
व्रत करण्याचे दिवस	मंगळवार

**देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् ।
सुखं दुःखं स्वभावज्य लग्नभावान्निरीक्षयेत ॥**

वृश्चिक लग्न असणाऱ्या लोकांचा गुप्तता राखणे, खोल, अंतर्मुख, गूढ, नवचैतन्य प्राप्त करणे किंवा भ्रष्ट होणे, संकोची, समजण्यास दुर्लभ, धीट, दुराग्रही, चिकाटी असणारे, विचारात हट्टी असणारे, सृजनशील, स्व-निर्भर, स्व-नियंत्रित (अपवाद कदाचित फक्त भावनावश असणारे), आणि निःशब्द असण्याकडे कल असतो.

आध्यात्मिक ज्योतिषी इसाबेल हिकले यांच्या म्हणण्यानुसार, कोणताही अविकसित आत्मा वृश्चिक लग्नासह जन्म घेत नाही. हे एक शक्तीशाली लग्नाचे चिह्न आहे.

“ ते अशा रणभूमीचे प्रतिनिधित्व करते जेथे अधिक उच्च आणि नीच आत्मे मरणांतिक युद्धासाठी येतातच. ते सुसंगत केले गेले पाहिजेत आणि नीच आत्म्यांना अपरिहार्यपणे मरावे लागते आणि उच्च आत्मे आणि त्यांच्यात वसणाऱ्या परमेश्वराला वाट करून द्यावी लागते आणि त्यांची आज्ञा पाळावी लागते.

शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक आणि आत्मिक सर्व पातळ्या समाविष्ट आहेत. तुम्ही वरवर शांत दिसून येता, परंतु आतमध्ये तुम्ही तीव्रतेने भावनात्मक असू शकता.

खोल पाणी शांत असते, जसे म्हटले जाते. तुमचा निःशब्द राहाण्याकडे कल असतो, नेहेमी इतरांच्या प्रेरणा माहिती

करून घेण्याच्या इच्छेने, परंतु कधीही तुमच्या स्वतःच्या प्रकट करणार नाही.

तुम्हाला गुप्तहेर किंवा फेरेटसारखे शोधून काढायला आवडते. तुम्हाला सर्व काही माहिती असायला हवे, सर्व काही कसे आणि का. तुमच्याकडे उत्तम निर्धार आणि बळ असते, कोणत्याही प्रतिस्पर्ध्यावर मात करण्यासाठी पुरेसे, अगदी तुमच्या स्वतःवर सुद्धा.

“ तुम्ही तिरस्कार, स्वामित्वाची भावना आणि मत्सर काबूत ठेवणे आवश्यक आहे. येथे गुढविद्या, मृत्यु, लैंगिक संबंध किंवा उपचारांविषयी आवड, व्यापून जाणे, उत्सुकता आणि /किंवा क्षमता असू शकते.

तुम्ही एक सैतान होऊ शकता किंवा देवदूत, गरूड किंवा विषदंश करणारा विंचू. शिकण्याचा आध्यात्मिक धडा: क्षमाशीलता. मंगळ आणि प्लुटो वृश्चिक राशीवर राज्य करतात त्यामुळे तुमच्या कुंडलीत मंगळ आणि प्लुटोचे महत्वाचे स्थान असेल.



शिकण्याचा आध्यात्मिक धडा



माफी

सकारात्मक लक्षण



शक्तिशाली

वचनबद्ध

हुशार

कल्पनारम्य

नकारात्मक लक्षण



मत्सरी

क्षमा ना करणारा

निश्चयी

गुप्त



With the help of our experts we does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your horoscope and provide you this Janam Patrika in PDF format.

iRise WebnApp Technologies Pvt. Ltd.

<http://www.astrorobo.com>

+91-79990-95593

iwebnapp@gmail.com